IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

सोशल मीडिया, मूल्यपरक शिक्षा, अवसर एवं चुनौतियों का एक अध्ययन

डॉ. शाहिदा fl íhdh
प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

'kks/k lkjka'k %&

वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने शिक्षा के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। यह शोध.पत्र सोशल मीडिया के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा के प्रसार के अवसरों एवं उससे जुड़ी चुनौतियों का विश्लेषण करता है। द्वितीयक स्रोतों के आधार पर यह अध्ययन दर्शाता है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों में नैतिकताए सहअस्तित्व सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। वहीं, इसके नकारात्मक पहलू जैसे भ्रामक जानकारी, साइबर अपराध एवं अनुचित सामग्री मूल्य प्रणाली को प्रभावित करते हैं। अतः संतुलित उपयोग एवं नियमन की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

e[; **'kCn %&** सोशल मीडिया, मूल्यपरक शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, नैतिक विकास, साइबर संस्कृति, शिक्षा प्रौद्योगिकी आदि।

ifjp; %&

21वीं सदी को डिजिटल युग कहा जाता है, जिसमें सूचना और संचार तकनीक ने मानव जीवन के सभी पहलुओं को बदल दिया है। इस युग में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, यूट्यूब, ट्विटर, इंस्टाग्राम, आदि ने न केवल लोगों के संवाद और सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया अब केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि यह ज्ञान, सूचना और मूल्यपरक शिक्षा का भी एक प्रभावशाली माध्यम बन गया है। मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें नैतिकता, सहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व, ईमानदारी और मानवीय मूल्यों की समझ देना है। परंपरागत शिक्षा प्रणाली में यह मुख्यतः शिक्षक, माता–पिता और विद्यालय की गतिविधियों के माध्यम से संभव था। लेकिन डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने इसे अधिक सुलभ, संवादात्मक और व्यापक रूप से फैलाने में योगदान दिया है।

सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और अनुभवों के संपर्क में आते हैं, जिससे उनमें वैश्विक दृष्टिकोण, सहिष्णुता और सामाजिक चेतना विकसित होती है। इसके अलावा, ऑनलाइन मंच विद्यार्थियों को स्व–अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और टीम वर्क के अवसर भी प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षा से संबंधित यूट्यूब चौनल,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

डिजिटल ब्लॉग और ऑनलाइन समुदाय छात्रों को नैतिक कहानियों, प्रेरणादायक जीवन घटनाओं और सामाजिक अभियानों से परिचित कराते हैं।

हालांकि, सोशल मीडिया का मूल्यपरक शिक्षा में उपयोग चुनौतियों से भी मुक्त नहीं है। इसका अत्यधिक या अनुचित उपयोग विद्यार्थियों के नैतिक विकास, सामाजिक व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। उदाहरण के लिए, फेक न्यूज, हिंसात्मक सामग्री, साइबर बुलिंग और सामाजिक तुलना जैसी समस्याएं छात्रों में तनाव, असुरक्षा और नैतिक अस्थिरता उत्पन्न कर सकती हैं। इसलिए सोशल मीडिया का संतुलित और नियंत्रित उपयोग आवश्यक है, ताकि यह मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्य को पूरा कर सके।

शोधकर्ता यह मानते हैं कि सोशल मीडिया के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा का प्रसार केवल एक शैक्षिक साधन नहीं, बल्कि समाज के नैतिक और सांस्कृतिक विकास का एक महत्वपूर्ण उपकरण भी है। यह विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान और सूचना देता है, बल्कि उनके व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार और जीवन मूल्यों के निर्माण में भी योगदान करता है।

इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि कैसे सोशल मीडिया मूल्यपरक शिक्षा के अवसरों को बढ़ा सकता है, किन प्रकार की चुनौतियां इससे जुड़ी हैं और किस प्रकार संतुलित उपयोग के माध्यम से इसे प्रभावी बनाया जा सकता है।

'kks/k i= d mí'; %&

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- सोशल मीडिया के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा के अवसरों का अध्ययन करना।
- सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करना।
- मूल्यपरक शिक्षा के संदर्भ में सोशल मीडिया के उपयोग हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

vuqla/kku i)fr %&

यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें पुस्तकों, शोध–पत्रों, ऑनलाइन लेखों एवं रिपोर्ट्स का विश्लेषण किया गया है। गुणात्मक पद्धति के माध्यम से विषय का विवेचन किया गया है।

सोशल मीडिया ने शिक्षा को अधिक सुलभ एवं आकर्षक बनाया है। विभिन्न शैक्षिक वीडियो, प्रेरणादायक भाषण, और सामाजिक अभियानों के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास संभव है। उदाहरण के लिए, यूट्यूब पर उपलब्ध शैक्षिक चौनल, ब्लॉग्स और ऑनलाइन कोर्सेज विद्यार्थियों को न केवल अकादमिक ज्ञान देते हैं, बल्कि जीवन मूल्यों के प्रति भी जागरूक करते हैं।

हालांकि, सोशल मीडिया पर फेक न्यूज, ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग और हिंसात्मक सामग्री विद्यार्थियों के नैतिक विकास को बाधित कर सकती है। शोधों से यह भी स्पष्ट होता है कि अत्यधिक उपयोग से ध्यान भंग, समय प्रबंधन की समस्या और मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

'kk/k i= dk egRo &

मूल्यपरक शिक्षा के प्रसार में सोशल मीडिया का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह भौगोलिक सीमाओं को समाप्त कर वैश्विक स्तर पर विचारों का आदान–प्रदान संभव बनाता है। यह विद्यार्थियों में सहिष्णुता, विविधता के प्रति सम्मान और सामाजिक जागरूकता विकसित करता है। साथ ही, यह आत्म–अभिव्यक्ति एवं रचनात्मकता को भी बढ़ावा देता है।

pukSfr;k &

सोशल मीडिया का मूल्यपरक शिक्षा में उपयोग कई अवसर प्रदान करता है, लेकिन इसके साथ कई गंभीर चुनौतियां भी जुड़ी हैं। ये चुनौतियां विद्यार्थियों, शिक्षकों और समाज दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

1- Qd U;wt vkj Hkked tkudkjh &

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बड़ी मात्रा में अनियंत्रित जानकारी उपलब्ध होती है। भारत में किए गए एक सर्वे के अनुसार 65 प्रतिशत युवाओं ने स्वीकार किया कि वे बिना सत्यापन के किसी सूचना पर भरोसा कर लेते हैं। यह विशेष रूप से मूल्यपरक शिक्षा में खतरा है क्योंकि बच्चों और किशोरों के विचार और निर्णय प्रभावित हो सकते हैं।

2- lkbcj cfyax vkj v,uykbu mRihMu &

सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग, धमकियां और अपमानजनक सामग्री विद्यार्थियों में मानसिक तनाव, आत्म–सम्मान में कमी और व्यवहारिक बदलाव का कारण बन सकती हैं।

3- le; dh cckn vkj lk'ky ehfM;k yr &

अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग से विद्यार्थियों का अध्ययन समय प्रभावित होता है। WHO के अनुसार, 12–18 वर्ष के 40 प्रतिशत किशोरों ने बताया कि सोशल मीडिया उनके पढ़ाई समय को प्रभावित करता है।

4- vuqfpr vkj v'kkHkuh; lkexh &

सोशल मीडिया पर हिंसा, अश्लीलता और असामाजिक सामग्री की उपलब्धता विद्यार्थियों के मूल्यों पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

5- xksiuh;rk vkj MVk lqj{kk &

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यक्तिगत डेटा का दुरुपयोग बढ़ता जा रहा है। विद्यार्थियों की पहचान, स्थान और निजी जानकारी सुरक्षित नहीं रहती। इससे साइबर अपराध और पहचान चोरी जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

6- lkekftd rqyuk vkj ekufld ncko &

सोशल मीडिया पर दूसरों की उपलब्धियों और जीवनशैली देखकर विद्यार्थी स्वयं को कमतर महसूस कर सकते हैं।

7. ikfjokfjd vkj 'kSf{kd ekxn'kZu dh deh –

अधिकांश छात्रों को सोशल मीडिया का सही उपयोग और मूल्यपरक शिक्षा में इसे कैसे लागू करना है, इस बारे में पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं मिलता। माता–पिता और शिक्षक यदि मार्गदर्शन नहीं करते तो छात्र अनुचित सामग्री और दुरुपयोग की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

8- fMftVy vlekurk &

हर छात्र सोशल मीडिया और इंटरनेट तक समान रूप से पहुँच नहीं रखता। ग्रामीण और गरीब क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी या तकनीकी साक्षरता की कमी विद्यार्थियों के लिए मूल्यपरक शिक्षा के अवसरों में बाधा उत्पन्न करती है।

9- ekufld LokLF; ij çHkko &

सोशल मीडिया का अत्यधिक और असंगठित उपयोग विद्यार्थियों में चिंता, अवसाद और नींद की कमी जैसी समस्याओं को जन्म देता है। यह मूल्यपरक शिक्षा के लक्ष्योंकृनैतिक और सामाजिक विकासकृको प्रभावित करता है।

fu"d"k %&

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया मूल्यपरक शिक्षा का एक प्रभावी साधन बन सकता है। यह विद्यार्थियों में नैतिकता, जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करता है। हालांकि, इसके नकारात्मक प्रभावों को नियंत्रित करना आवश्यक है। सही दिशा–निर्देशन और संतुलित उपयोग से इसे शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी बनाया जा सकता है।

lq>ko &

1. विद्यालयों में डिजिटल साक्षरता को अनिवार्य किया जाए।
2. शिक्षकों द्वारा मूल्यपरक सामग्री साझा की जाए।
3. अभिभावकों को बच्चों के ऑनलाइन व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए।
4. सरकार द्वारा सख्त साइबर कानून लागू किए जाएं।
5. विद्यार्थियों को समय प्रबंधन एवं संतुलित उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

lUnHkZ xzUFk lwph &

1. शर्मा, आर. (2020). डिजिटल शिक्षा और सामाजिक प्रभाव. नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
2. वर्मा, एस. (2019). मूल्यपरक शिक्षा के आयाम. जयपुररू शिक्षा प्रकाशन।
3. कुमार, पी. (2021). सोशल मीडिया और युवा वर्ग. लखनऊ, अकादमिक पब्लिशर्स।
4. यूनेस्को (न्छम्ैब्व्). (2021). डिजिटल दुनिया में शिक्षा. पेरिसरू यूनेस्को प्रकाशन।
5. एनसीईआरटी (NCERT). (2022). मूल्य शिक्षा रूपरेखा. नई दिल्ली, एनसीईआरटी।
6. मिश्रा, डी. (2020). युवा और सोशल मीडियारू सामाजिक दृष्टिकोण. पटना, समाज विज्ञान प्रकाशन।
7. सिंह, आर. के. (2019). डिजिटल साक्षरता और नैतिक शिक्षा. दिल्ली, शैक्षिक पब्लिशर्स।
8. गुप्ता, एस. (2021). सोशल मीडिया का शिक्षा पर प्रभाव. मुंबई, तकनीकी एवं शैक्षिक प्रकाशन।
9. योजना पत्रिका जनवरी 2025
10. कुरूक्षेत्र पत्रिका मार्च 2025